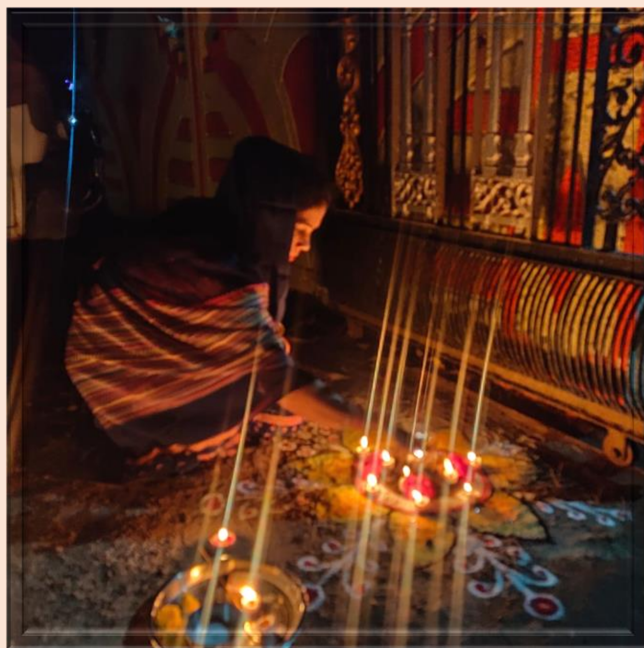
पोवारी काव्यदीप



कवी-श्री.डी.पी.रहांगडाले

पोवारी काव्यदीप



श्री. डी. पी. राहांगडाले

पोवारी काव्यदीप
Powari Kavyadeep

कवि : श्री. डी. पी. राहांगडाले
फोन: +91 9021896540

© सर्वाधिकार
सौ. छाया सुरेंद्र पारधी, मु. पो. सिहोरा, त. तुमसर, जि. भंडारा.

प्रकाशक
इंजी. गोवर्धन बिसेन,
गायत्रीकुंज, गजानन कॉलोनी, कुडवा, गोंदिया – 441614
ई-मेल: gabisen66@gmail.com/फोन: +91 9422832941

मुद्रण
श्री हरीश जोगळेकर,
वेदिका ग्राफिक्स, शॉप क्र. 144 विंग क्र. 4 रजत संकुल,
गणेशपेठ, नागपूर – 440018/फोन: +91 9730034030

मुखपृष्ठ
श्री ऋषी बिसेन, IRS

मुद्रित शोधन :
इंजी. गोवर्धन बिसेन,
फोन: +91 9422832941
प्रथमावृत्ती : 16 डिसेंबर 2023
मुल्य : ₹125/-

ISBN :

मोरी जीवन संगिनी सौ. धनवंता रहांगडाले इनको स्मुर्तीला समर्पित



दुय शब्द

आदरणीय वाचकगण,

""पोवारी काव्यदीप "" यवं मोरो पहिलोच काव्यसंग्रह तुमरो सामने प्रस्तुत करन को घनी बहुतच आनंद होय रही से. आम्ही नहानपणं घर पोवारीच बोलजन. बादमा शिक्षण पूरो भयव अना नौकरी परा जाये लका बाहेर मायबोली बोलन को प्रमाण कमी भयेव. मोरो अजी अना माय को जिवंतपण आमी घर पोवारीच बोलत होता. सरकार को तीस साल की सेवा करस्यान नायब तहसीलदार मुन रिटायर भयेव. पोवारी बोली आमरी मायबोली शहर मा लुप्त होनको कगार पर पोहच रहिसे यवं देखस्यानी खूब मन दुःखी भयेव. मायबोली को उत्थान साती काही तरी करे पाहिजे मुहून एक नहानसो काव्य संग्रह लिखन को प्रयास करी सेव.

"माय बाप पोवार, पोवार जात मोरी "
"मी पोवार को टुरा, माय बोली पोवारी."

पोवारी बोली प्रेमळ,मायाळू ना समजनला एकदम सरल सोपी से. बोली समाजला एक सुत मा बांधशान ठेवसे. बोली आपलो समाज को अमूल्य ठेवा आय. अना ओको जतन करन की आपली सबकी जबाबदारी से.

"मायबोली को अमोल ठेवा, करो गुणगान"
"मर्यादाशिल पोवारी, बढ़े मानपान ना शान"

मोरो काव्यसंग्रह "पोवारी काव्यदीप" मा पोवारी का सण तिव्हार ,समाज, इतिहास, इस्टदेव, कुलदेवी अना अलग गलग पोवारी रीति-रिवाज पर यवं साठ कविता को संग्रह . बोली प्रसारण मा महत्त्वपूर्ण योगदान देये अशी मोला आशा से.

विनम्र
से.नी.नायब तहसीलदार
श्री. डी. पी. राहांगडाले
गोंदिया /९०२१८९६५४

प्रस्तावना

पोवारी काव्यदीप, आदरणीय श्री डी पी रहाँगडाले द्वारा पोवारी भाषा मा रचित विविध विषय परा ७६ कविता इनको संग्रह आय। पोवारी भाषा गोंदिया, सिवनी, बालाघाट, भंडारा अना नागपुर ज़िला मा मुख्य रूप लक़ निवासरत पोवार समाज की मायबोली आय। भाषाई अध्ययनकर्ता इनको अनुसार पोवारी भाषा को मूल स्वरूप, पोवार समाज को मूल स्थान पश्चिम मालवा (अज़ को उत्तर-पश्चिम भारत का क्षेत्र) की भाषा इनको आय। येको लाई यन् भाषा मा राजस्थानी, गुजराती, मालवी को संग समाजजन को बाद मा विस्थापन का क्षेत्र बुंदेलखंड अना विदर्भ की भाषा बुंदेली अन् मराठी को प्रभाव दिस जासे। पोवारी भाषा का स्वरुप को अध्ययन मा समाजजन का क्षेत्रवार बदलाव को इतिहास दिस जासे। यव कारन आय की पोवारी भाषा वैनगंगा क्षेत्र मा निवासरत पोवार(छत्तीस कुर पंवार) समाज की आपरी मातृभाषा से।

आदरणीय श्री डी पी रहाँगडाले जी न् पोवार समाज को सांस्कृतिक अना सामाजिक स्वरूप को संग सनातनी धरम विषय परा आपरो साहित्य का लेखन् करिसेत्। उनना आपरो साहित्य मा समाज का संस्कार ला ठेवन को आह्वान को संग आदर्श पोवारी जीवन दर्शन परा आपरी लेखनी लक काव्य रूप मा साहित्य को दिवा पेटावन का भागीरथ जतन् करीसेन्।

समाज मा रिश्ता-नाता, आपरो पोवारी कुर को मान्, पोवार समाज को सम्मान, पोवारी का नेंग-दस्तूर, सन्-तिव्हार, निसर्ग का संरक्षन् को संग आपरो जीवन यात्रा जसो विषय परा लगत साजरी कविता, पोवारी काव्यदीप मा समाहित सेती। श्री डी. पी. रहाँगडाले जी सुर का बी धनी आती। पोवारी भाषा मा भजन-कीर्तन, आरती लक़ ईश्वर भक्ति को उनको भाव, काव्य को रूप माय सरस्वती अना माय गढ़कलिका को आशीर्वाद लक निर्मित भयी से। आपरी कविता मा उनना आपरो आराध्य इनलक पोवार समाज को संग सम्पूर्ण मानवता का कल्यान की बिनती करीसेत्।

मध्य भारत मा आवन् को बाद मा माय गंगा को स्वरूप वैनगंगा को पावन आंचलमा पोवार समाज ना खुप उन्नति करीसेत्। आदरणीय रहाँगडाले जी को द्वारा माय वैनगंगा को समाज परा आशीर्वाद का शब्द रूपमा चित्रन् उनको प्रति समाज को आभार का दर्शन होसे।

आपरो सनातनी संस्कार का चित्रन् काव्य रूप मा उतारकन् नवी पीढ़ी ला यव सीख की आमरो पुरातन संस्कार ला भूलनो नहाय। महाभारत मा प्रभु श्रीकृष्णा की सीख, तीज-तिव्हार का महत्व अना ओको मान, हिन्दू सनातनी

संस्कृति को रक्षन्, फागुन को रंग को संग जीवन मा खुशहाली को रंग जसो भाव लक़ ओत् प्रोत उनकी कविता को बाचन् लक़ आमी आपरो जीवन मा यन विविध भाव ला अंतरित कर सिक सेजन्। जीवन दर्शन परा सजी कविता जसो अनमोल से जीवन, मोहतुर, शब्द घाव, शब्दकिच मलम, जीवन साथी, संगी(मित्र) मा येक साहित्यकार को उत्कृष्ट साहित्य को संग समाज ला प्रेरणा को भाव को दर्शन होवसे।

यव मान्य तथ्य से की साहित्य समाज को आरसा आय। आदरणीय श्री डी. पी. रहाँगडाले को द्वारा पोवारी भाषा मा सृजित, "पोवारी काव्यदीप", आपरो आप मा येक असो आरसा से जेकोमा पुरो मानुष को जीवन-दर्शन, आधात्यम, सनातनी हिन्दू धरम्, पोवारी संस्कृति, वैभवशाली अतीत्, निसर्ग को मान्, सामाजिक प्रेरना अना मानदंड, पोवार समाज को सांस्कृतिक वैभव जसो सप्पाई रंग को दर्शन होय जासे। यन् साहित्यिक आरसा मा आदर्श जीवन को स्थायी चित्र का निरुपन् होय गयी से। यव चित्र चिरकाल तक न् केवल पोवार समाज ला अपितु पुरो मानव समाज ला येक दिवो को माफिक रस्ता दिखावन को काम करहे यव मोरो पक्को भरुषा आय। मी साहित्यकार, कथाकार, कीर्तनकार, सामाजिक चिंतक जसो विविध व्यक्तित्व का धनी आदरणीय श्री डी. पी. रहाँगडाले का हिरदय लक़ आभार मानुसू की उनना पोवारी भाषा मा, "पोवारी काव्यदीप" की रचना करखन् समाज ला येक प्रकाश स्तम्भ देयी सेती। मी ईश्वर लक बिनती करूसू की वय उनला दीर्घायु राखो अना उनला येतरी शक्ति देव की वय जीवन पर्यंत असच आपरो शब्द लक़ साहित्य ला समृद्ध करखन् मोठो इतिहास रचेती।

शुभकामनाओ को संग
तुमरो

ऋषि बिसेन
ग्राम : खामघाट, ज़िला: बालाघाट(म. प्र.)
सयुंक्त आयुक्त(आयकर विभाग), नागपुर

विषय सूची


पोवारी
काव्यदीप

१ . आरती -माय गढ़कालीका की

जय कालीका माता, मैया गडकालिका माता ।।
आरती करू माय तोरी ,तू सेस सुखदाता ।।धृ ।।

ब्रम्हांड़ की रखवाली तू माता, धारानगर आयी ।।
धारानगर को राजा भोज, उनकं मन भायी ।।जय।।

तू कालिका तूच भवानी, तूच दुर्गा माता।।
सुख दायनी माय मोरी,तूच सेस दुख हर्ता ।।जय।।

राजा भोज का वंशज, पोवार की जाती।।
शरनमा आया तोर,करू तोरीच आरती ।।जय।।

सुंदर सिंहासन तोरो, झलके माणिक मोती।।
ध्यान लगज़ासे तोरो सुधबुध बीसर जाती ।।जय।।

बेलफुल नरीयल चढावुन, अगरब-ती संगमा।।
कृपा होय जाय तोरी, रंगू न भक्ती क रंगमा ।।जय।।

वैनगंगा क ओटामा बस्या, पोवार,छतीश कुर।।
सबको कल्याण करजो माय,नोको करजो दूर।।जय।।

भक्त तोर चरनमा आया,मैया भक्ती करसेती।।
करजो सबपर छाया,मैया करून तोरीच आरती॥जय।।

****

२. निलकंठ महादेव

देव ना दानव मा पहेले भई लळाई मनमानी ।
निलकंठ महादेव की अजबगजब से कहानी ।।

दूही करका सैनिक मारेगया नूकसान भयेव भारी ।
संधी करीन दूही जनन करीन सागर मंथन की तयारी ।।

मंदराचल की रई बनाईन वासूकी सरप को नाळा ।
विषणू भगवान कासव बनेव चलेव वाहां घूसाळा ।।

सागर मंथनमा निकलेव हलाहल जहेर मोठो भारी ।
देखशानी हलाहल जहेर ला हिंमतच सबकी हारी ।।

तब सब देखनबशा महदेवकर बिनती करसेती भारी ।
तूमरबिना कोणी नाहाय आता देवईनको हितकारी ।।

पियीस हलाहल महादेव न ओक गरोमा अटक गयो ।
ओन जहर लकाच महादेव को गरो निळो भयेव ।।

ओनच निलकंठ महादेव की मानता करे दूनियासारी ।
महिमा ओकी निराली से पूजा करसेती नरनारी ।।

****

३ . हनुमान

पुत्र प्राप्तीसाठी दशरथ न यज्ञ करीस ।
ओन्ज्यालका निकलेव पिंड को गोला ।।
दशरथ की तीन रानी,उनला बाटनसाती।
तीन भाग करशांन देईस रानी हीनला।।

कैकई क हातमाको ,झळपिस घार न ।
ऋशीमुख पर्वत परा अन्जनी तप कर।।
घार जवर को गोला,हवा क बल लका।
पळेव जायशान अंजनी क आंजुर पर।।

ग्रहण करीस पिंडको गोला अंजनीन।
पोट आयेव ऋद्रवतार विर हनुमान ।।
भक्त असो अवतरेव अकराओ ऋद्र।
हृदय मा समाय गयेवश्री राम भगवान।।

सीता शोध करनसाती करीस उडाण।
गएव लंका मा,कर सात समुदर पार ।।
आग   लगाईस सोनो क लंका मा   ।
मारे गयेव रावण, उतरेव धरती को भार।।

कोणी कसेती हनुमान,पवनसुत,मारोती।
गाव गाव मा जेकी बसापत,मंदिर सेती।।
हर दुख मा सहाय,ना रवसे सबपर छाया।
मणुन गावो हनुमान चालीसा ना आरती।।

****

४. पुजा अवजार फाटा की

दसरा क दिवस रामजी न /
दशासुर रावण ला मारिस. //
एन च दिवस माय दुर्गा न. /
महिषासुर को वध करीस //

अर्जुन न ब्रुंन्हलला रूपमा. /
विराट-उत्तरला मदत करीस//
शमी झाळपरका अस्त्रलेकर/
कौरव सेना शिपाई मारिस्. //

शमी झाळ क पानाको सोनो/
बाटो , एकमेकला आलिंगन //
मयरी , बळी की करो पुजा /
शस्त्र पूजा,करो अर्पण तनमन//

घरका जमाओ अवजार फाटा /
ईरा,पावसी,पावळा टिकास //
बसला, टंग्या ,कुदर , संबल /
सबको पूजन करो झकास. //

अधर्म परा धर्म की विजय. /
विकार रुपी रावणको दहन//
दस इंद्रिया काबुमा ठेवो. /
शुध्द आचार विचार को वहन(/

****

५ अळीच अक्षर

अळीच अक्षर को ब्रम्हा,विष्णू
अळीच अक्षर की सृष्टी।
अळीच अक्षर की दुर्गा ,लक्ष्मी
अळीच अक्षर की तृष्टि ॥

अळीच अक्षर को कृष्ण,पार्थ
अळीच अक्षर को युद्ध।
अळीच अक्षर को तंत्र मंत्र
अळीच अक्षर को क्रोध॥

अळीच अक्षर को शब्द,अर्थ
अळीच अक्षर की भक्ती।
अळीच अक्षर क को जन्म,मृत्यू
अळीच अक्षर की शक्ती. ,॥

अळीच अक्षर की इच्छा,ध्यान
अळीच अक्षर को संत।
अळीच अक्षर की धर्ती,स्वर्ग
अळीच अक्षर को अंत. ॥

अळीच अक्षर का मित्र,शत्रू
अळीच अक्षर को धर्म।
अळीच अक्षर को सत्य ना प्यार
अळीच अक्षर को कर्म. ॥

अळीच अक्षर की बात न्यारी
ओकमाच से जीवन सार।
अळीच अक्षर का कर्ता, धर्ता
होय जाय भवसागर पार।

एक कहावत से:- पोथी पंढी पढी जग मुआ पंडीत भया न कोय /ढाई अक्षर प्रेमका पढे सो पंडीत होय. // एन अळीच अक्षर को मतलब आब समजमा आयेव.

****

६. माय गडकालिका
(चाल:- मां ज्वाला तेरी)

जय अंबे माय गड कालिका नमन तोला बारबार
भक्त की तू रखवाली से २ //
सिंहासन पर चढी भवानी कर सोळा सिंनगार ss
महिमा अजब निराली से //धृ //महिमा........

कोणी कसेती माय दुर्गा कोणी कसेती भवानी /
धारानगरी मा आसन तोरो चंडिका कसेत कोणी //
भक्त आया तोर चरनमा करदे बेडापार ssss
तोर बिन कोन वाली से २ //१//सिंहासनपर......

राजा भोज की कुलदेवी जेका आम्ही वंशज आजन /
पोवार जाती आय आमरी सेवा तोरीच कर सेजन //
तोर द्वार पर मस्तक ठेऊ ना बेलफुल चढावू ssss
हात आरतीकी थाली से २ //२// सिंहासनपर......

वैनगंगा क ओटामा बसीसे पोवार की जाती/
रातदीन वय गावसेती माय तोरीच आरती //
नोको दुरावजो माय आमला गुण गावुन तोरो sss
पोवारी च मायबोली से २ //३//सिंहासनपर.......

धरती क कोना कोना मा बसी पोवारकी जाती/
बोलसेत वय पोवारी ना करसेती तोरीच आरती //
आशीर्वाद सबला देजो करूसू बीनती बारम्बार sss
तुच भक्त की रखवाली से २ //४//

****

७ . हडपाक का दिवस (बाराक्षरी)

कृष्ण भाद्रपद का पंधरा दिन
पूर्वज ,पितृ तर्पण   करसेती
प्रतिपदा लक अमावस्या वरी
ओलाच श्राद्ध हडपाक कसेती

आपला पितृऋण फेड़नसाती
सराद की प्रथा चलकर आयी
बाप क मरेपर सराद कर
जिनकलकाच या उत्पत्ती भयी

जेन दिन बाप अग्नी मा पळेव
वाच तिथी सराद ला धरसेती
बाप   मरेपर   पयले   करसा
मंग. पयलो सराद करसेती

पयलो सराद मोठी थाट बाट
जवाईला च कुसार ठेवसेती
सुमकी अंगठी,आंगमा जानवा
तेलबळा , सुवारी बनावसेती

चवरी जवळच पितृ तर्पण
ना घरपरा कागुर फेकसेती
पाच कु-याका लोक जेवनसाती
तब पितृ ला तृप्त करावसेती

आपली याच प्रथा ना परम्परा
आवंडंबर म्हणून नोको मानो
उद्दार करो आपलं पूर्वजको
आशीर्वाद सब पितृको से लेनों

****

८ . तुलसी को बीह्या का श्लोक

पयले सुमरूण गढ़कालीका कुलदेवी आमरी
आशीर्वाद देजो मा आमला पावन धारानगरी
राजा भोज का वंशज आमी पुजा करुन तोरी
शुभाशिष देजो सबला या कामना करजो पुरी
कुर्यात सदा शुभमंगलम सावधान।। १।।

तयार भयगया नवरदेव नवरी बिह्यासाठी अता
आयेव सब समाज मोह धरशान जपी तपी नेता
आशीर्वाद देती सब तोला मंगलमय शुभ कामना
सुखी रहे संसार तुमरो अर्पण करसेती सद्भावना
कुर्यात सदा शुभ मगलम सावधान।। २।।

कण कण लका धरती बनी बुंद बुंद लका सागर
जन जन लका समाज बनेव बनगयेव धारानगर
पावन धरती धार की से आमरी भारतभुमी पर
सुख शांती लका नांदसेती पोवारकी छ-तीस कुर
कुर्यात सदा शुभ् मंगलम सावधान।। ३।।

चौदा भुवन सातही तला तिन लोक मा देखेव नही
चार धाम चौ-याशी पुरी सय शास्त्र को लेखेव नही
मंदीर मंदीर फीर गयेव पर ओको पता लगेव नही
आचार बिचार शुध्द ठेवो ओक बीन देव भेट नही
कुर्यात सदा शुभ मंगलम सावधान।। ४।।

सतीत्व हरण भएव वृंदा को मारे गयेव जालंदर
श्रापलका गोटा भएव विष्णु तुलसी बनी वृंदा नार
एवच दिवस आयेव होतो कार्तिक शुध्द एकादशी बीह्यामा नवरदेव शालीग्राम
नवरी बनगयीं तुलसी
कुर्यात सदा शूभ मंगलम सावधान।।५।।

****

९ . गुढीपाडवा

हिंदु को सण पयलो
घर घर बांधो गुढी
बैर भाव बिसरो ना
तोळ देवो सब आढी

गुढी मनजेच झेंडा
वाच विजय पताका
तन मन शुध्द करो
दिन ये नवरात्रका

चैत्र शुध्द प्रतिपदा
गुढी हात मा धरीस
एन दिन रामजी न
वध बालीको करीस

सब घर बांधे गयी
गुढी बेसकळ परा
आंबा पानकी तोरण
बंधी दरवाजा परा

नवो उमंग रव्हसे
होऊ नोको गा बेताल
गुढी मन की बनाव
ठेव कोरोना को ख्याल

****

१० . चैत्र नवरात्री

हिंदू संस्कृती को नवो साल
चैत्र प्रतिपदा पासून नव दिवस
नवरात्री, देवी की पूजा रव्हसे
मांगसेत जोगवा,फेडसेत नवस //१//

नव दिन नवदेवी की पूजा
वाच दुर्गा ना वाच आदीमाया
ब्रम्हा,विष्णु, महेश तिन्ही देव
निर्माता,पालक,संहारक भया //२//

नव देवी मा शैलपुत्री,ब्रम्हचारीणी,
चन्द्रघंटा, कुश्मांडा ,स्कन्दमाता
कात्यायनी, कालरात्री (कालीका)
महागौरी अना सिध्दीदात्री माता //३//

सुरु होसे बाहेर जत्रा आंगनमा
करो सैपाक ना देव देवी ला ठाव
सब मिलकर प्रेमलक जेवन करो
ठेवो शुध्द मन, मनमा भक्ती भाव //४//

आखरी दिवस आय नवमी को
सब देवीको करसेती पाहुणचार
ठाव लिजासेती मातामाय जवळ
कसे सुखी ठेवजो मोरो संसार //५//

नवरात्री को उपवास ना व्रत
तन मन लका, ना देवी को ध्यान
घर मा रहे समृद्धी,सुख शांती
ना बळजाय मानपान ना शान. //६//

****

११ . चैत्र मास

आयी बसंत; बहार
चैत्र मासकी फुवार
हिंदू को पयलो मास
गुढी बांधो द्वार द्वार //१//

भयी सुरु नव रात्र
लगे यात्रा को अंबार
करो उपास माताको
देवी पुजा द्वार द्वार //२//

सन राम नवमी को
राम जन्म गाव गाव
होसे भजन कीर्तन
करो सब भक्तीभाव //३//

मंग   हनुमान जन्म
चैत्र की पौर्णिमा कसे
तिज अमावास्या वरी
चैत्र महिना रव्हसे //४//

नवो साल खुशी छाई
नोको होऊ तू बेताल
खुशी जरूर मनावो
ठेवो कोरोनाको ख्याल //५//
****

१२ . तिज

भई चैत   अमावस
शुध्द वैशाख तृतीया
तिज ओलाच कसेती
वाच अक्षय तृतीया

यन दिवस   करणं
पितृ देवको दर्पण
भरो करसा,ना पूजा
पाच आंबा को अर्पण

शुध्द दिन शुध्द तिथी
तन मन शुध्द ठेवो
करो स्मरण पीतृको
तब आशीर्वाद पावो

तिज पासुनच सुरु
होसे चालु लाक्तखार
खेती किसानी साठीच
चेतो होसे कास्तकार

करो खेती सुरवात
सुरू खारी खरपळा
पिके खेती चांगलीच
दूर होय अवकळा

गया दिवस बिसरो
करो नवी सुरवातं
दिन चांगला आयेती
वया कालीकाको हात

****

१३ . आषाळी एकादशी
(चाल-आला थंडीचा महिना)

एकादशीला जाबीन,जाबीन पंढरपुर!
हरी नाव गावबीन,गावबीन एकच सुर!! ध्रु !!

जेज्यां ओवी गावसे,जनाबाई!
मिराबाई भक्तीमा दंग भई!
चलना गा भाऊ जलदी तयारी कर
हरी नाव गावबीन,गावबीन एकच सुर!!१!!

निवृत्ती,ज्ञानदेव,सोपान,मुक्ताबाई!
एकनिष्ठ भक्ती,काही कमी नहीं!
चंद्र चकोर असो वु चंद्रभागा को तिर
हरी नाव गावबीन,गावबीन एकच सुर!!२!!

सैवंता माळी ना गोरोबा काका
शेला बिंधीस वोन संत कबीरका
संत रोहीदास का झिकन लगीस ढोर
हरी नाव गावबीन,गावबीन एकच सुर!!३!!

पंढरी को महीमा केतरो गावुन
एकघन तरी पंढरीला जावुन
वारकरी को माहेर आय पंढरपुर
हरी नाव गावबीन,गावबीन एकच सुर!!४!!

****

१४ . श्रावण महिना

श्रावण महिनाकी महिमा
जितउत दिस हिरवोगार
घळीमा वा तपण लगसे
घळीमा पाणी थंडोगार

वरत्या देखो इंद्र धनुष्य
जसी तोरण बंधी अंबारी
सात रंगकी सुंदर छबी
देखो आकाशमा दोरी

घळीमा होसे वू अंधार
जसो दिवस बुळ जासे
घळीमा जब तपन निंघसे
तब दिवस वरत्या दिससे

श्रावण महिनामाच 'जिवती'
अना नांगपंचमी को सण
श्रावण पुनवा,भाईबहिण को
पवित्र राखीको बंधन

भक्त कावळ काहाळशानी
कसेत हरहर महादेव
कोणी मंदिरमा पूजा करसेती
कसेत मोला सुखी ठेव

जित उत हिरवो गार दिससे
जसो हिरवो शालू आंगपरा
भक्त भक्तिमा तल्लीन होसे
कर विठ्ठल को जयकारा

****

१५ . जिवती(दिपपुजा)

आयेव जिवती सण
करो सळा सारवन
दिपपुजाको भी मान
शुद्ध ठेवो तन मन

दिवोकाच उपकार
दिप पुजा आय सार
साफ करो घरदार
चौकचांदन अपार

दिवो अंधार भगा्व
ज्योत मनमा जगावं
अंतःकरण को भाव
शुद्ध,निर्मळ वू ठेव

देवघर ज्योत बाती
पुर्वज आपला आती
शांत गा करणसाती
शुद्ध ठेयशानी मती

देव्हारा उजारू दिप
करो उजाळोच खूप
भावे पुजो मायबाप
सप्पा जरेती गा पाप

टाको कागुर बिराणी
चळावो नारेन,पाणी
पुर्वजको ध्यान मनी
देव धुपाटनामा धुनी

कोणिको अलग त्योहार
करसेती मांसाहार
सबका अलग विचार
शुद्ध ठेवो गा आचार

१६.राखी को त्योहार

श्रावणी पुनवा /राखी को त्योहार//
गरोको वु हार/ भाई मोरो//१//

राखी को बंधन/ प्रेम को वु धागा//
नोको देजो दगा/ भाई मोरो//२//

लहानपण को /तोरो मोरो साथ//
धरशानी हात /जात होती//३//

द्रोपदी कृष्ण ला/बांधीस गा राखी//
बहीण ना सखी/जन्म भर //४//

लक्ष्मी न बली ला /राखीकीच पाती//
सोळाईस पती /द्वार पाल//५//

गणेश की ताई/मनसा वा बाई//
जब घर आई/राखी साती//६//

गणेश का टूरा /लाभ शुभ बरा//
बहीण आम्हला/पाहिजेणा//७//

गणेश को बल /संतोषी उत्पती//
रूद्धी सिद्धी,पती/ गणेशजी//८//

पोरस ला राखी/रोक्साना की भक्ती//
मंग भेटी शक्ती /पोरसला//९//

यम ला यमुना /राखी बांधू भाई//
अमर वा भई /जगत मा//१०//

कर्णावती मान /हुमायु ला भाई//
राखी साती गई /संकट मा //११//

भाई ताई प्यार/राखी को त्योहार//
पती पत्नी प्यार/ आय बापा//१२//

राखी को बंधन /एकमेक प्यार//
भवसिंधु पार /होय जाय //१३//

****

१७.दत्त जयंती/पांड पूनवा

निर्थ लोकमा सती जन्मी , जेकी कीर्ति महान /
अत्री मुनिकी सती अनुसयाजी पतिव्रता जान //

आग लगाईस नारद मुनीन स्वर्ग मा जायकर/
सांग, सब नारी मा पतिव्रता से अनुसया नार//

लक्ष्मी,सरस्वती, पारबती तिन्ही नाराज भई/
सांगसेती वय गरहानों पतिदेवला,चलकर गईं//

तुम्ही तीन देव मिलस्यानी नीर्थलोकमा जावो/
अनुसयाको भंग करो सतित्व ना वापस आवो//

तिन्ही देव साधु बनगया ना मंग गया चलकर/
अलख जगाईन जायस्यानी अत्रीजी क द्वारपर//

जेवन पाहिजे आमला,वाळजो नांगवी होयकर/
सती पतिव्रता नार अनुसयाला आयेव बिचार//

मंत्रिस पानी मारिस देवपर, पतिव्रता को सार/
लहाना बालक बनगया देव झुलाव पारणापर//

मालुम भयेव तिन्ही देवीला गयी वहां चलकर/
माफी मांगीन अनुसयाला ना सोळाईन भ्रतार//

त्रिदेव क कृपालका दत्तात्रय को जन्म भयेव/
होउच दि्स पुनवा,पांडपुनवा म्हणुन पुजे गयेव//

****

१८.चांदणी रात

चांदणी रात से ,चंद्रमा कोरो।
आयो उजाळो,एन दुनियामा।।
मी सोयव होतो पलंग पर।
घर   मोठांग क आंगनमा।। १।।

वरत्या चंद्रमा को उजारो।
जवळ आकाशगंगा राणी।।
ज़सो गंगा को झलक पानी।
चांदणी जमी होती मनमानी।। २।।

च्यार ठावा चार बाजूला।
उत्तर मा बुळगीकी खाट।।
वाहा चोरी करनला तयार।
तीन चोर देखत होता बाट।।३।।

ओला सप्तऋषी कसेती।
जवळ सय चांदणी नांगर।।
ओक आधारपरा चुरणी ।
करत होता कास्तकार ।। ४।।

दिवस उन्ती शुक्रतारा।
चमचम चमकसे भारी।।
सबांग चांदणीको उजारो।
द्दष्य दिससे बळो मनोहारी।। ५।।

आंगनमा चांदणी क रातमा।
सोवन की न्यारीच से मजा।।
आता शहरमा जायशानी ।
चार भीतमा भोगसे सजा.।। ६।।

****

१९.मोरो धनी,नही उठ सकार वकार
(तर्ज- लावणी)

मोरो धनी बाई ,नही उठ सकार वकार /
केतरो सहन करू,एकटी जिंदगी को भार//

मी भी नही उठु कहेव ना शब्द पर अळी /
दिवस निंघता वरी सोवनकी आदत पळी//
सत्यानाश जिंदगी को भयगयी वा तारतार/
केतरो सहन करू,एकटी जिंदगी को भार//१//

जिंदगी को राहाळगाळो पहाट उठ जासू/
आरथोपारथो उरकशानी सब काम करूसु//
खटलापर सोयव रव्ह जसो लगीसे बिमार/
केतरो सहन करू,एकटी जिंदगी को भार//२//

परा लगावणला से खेतमा जानकी घाई/
दिवस निंघ गयेव तरी जलदी उठत नही //
नही इनला कोणतोच जिंदगानी को बिचार /
केतरो सहन करू,एकटी जिंदगी को भार //३//

सकारीच उठो लेव शुद्ध थंडी थंडी हवा/
काया भी चांगली रहे, नहीं लगणकी दवा//
निर्मल होय काया, ना आचार बीचार /
केतरो सहन करू,एकटी जिंदगी को भार//४//

****

२०.आंजुरभर पिरम (प्रेम)

पिरम म्हणजे माया ! हृदयमा की वा दया /
शुद्ध,ना पवित्र काया !राम ,कृष्ण गोविंद //१//

जिवन क बाटपर !पिरम एक आधार /
होय सुखी च संसार !राम ,कृष्ण गोविंद //२//

मायको लहान बाळ !प्रेम निश्चल निर्मळ /
मनमाकी तळमळ! राम कृष्ण गोविंद //३//

बहिण भाईको प्रेम !सात्विकताको उगम /
माया ममता संगम ! राम ,कृष्ण गोविंद //४//

पाणी आव सरसरा ! पळेव धरतीपरा/
प्रेमभाव ओकपरा !राम ,कृष्ण गोविंद //५//

संसारक सागरमा ! प्रेमभावको आधार /
निरागस जिवन सारं !राम, कृष्ण गोविंद //६//

प्रेम जिवन आगर ! देवपरा ठेवू भार /
जिवनको वु आधार !राम ,कृष्ण गोविंद //७//

मिलजुल शानी रहो ! एकमेक प्रेम बाटो /
नफा होय,नही घाटो ! राम ,कृष्ण गोविंद //८//

प्रेम बिना नहीं भाव !भाव बिना नहीं भक्ती
ओक बिना नहीं मुक्ती !राम ,कृष्ण गोविंद //९//

****

२१ .पर्यावरण रक्षण

घनदाट जंगल होतो, हीरवो हीरवो रान
जेला देखकर हरपत होती भुक तहान
सावलीमा आराम करत होता पशु पक्षी
आंबा की अमराई ना मोहुको मोह-यान //१//

चार,ना चारोळी टेंभरुन भी भेटत होता
शरीर ला पौष्टिक होता,चव न्यारी न्यारी
मोठ चवलक खानला भेट मस्त रानमेवा
आक्सीजन भेट ना बरसात पळ भारी //२//

पर माणुस क डोस्काला का भएवत
जंगल काटीस ना लगाईस कारखाना
उजाळ कर देईस जंगल, धरती सारी
आपलो बिंध से भलतोच तानाबाना //३//

बरसात मा आता बारीस आव नही
उन्हारो की तपन भी तपसे भरमार
अलगलग रंग की आवसेत बीमारी
ना जीवन सबको होसे मोठो बेजार //४//

मनून एक झाळ काटोत दस लगाओ
पर्यावरण राखण मदतभी होय मोठी
सुखी रहे जिवन,जगाओ देश प्रेम
झाळ जगाओ,पर्यावरण रक्षण साठी //५//

****

२२.कास्तकार

कास्तकारी   नाहाय या बरी
बैल नही जुपनला,अन्न खानला
रात ना   दिवस राबराब करसे
गती नही   रव्ह ओक वानला //१//

सकाळीच उठकर खेतमा ज़ासे
कर पेरणी,पीक लगावसे चांगला
पर कास्तकारी काही पुराव नही,
रव्हसे फातकीच बनियन आंगला //२//

कर्ज काहाळशान खेती लगावसे
पर कधी नही पळेव चांगलो पानी
धुरोपर बसकर,झाळक सावलीमा
मंग बिचार करसेती केविलवाणी //३//

टुरा टुरी को कसे बीह्या रयगएव
कसे कसो होय कर्ज फेलकर
निराशा भयीं,ना भलतोच बिचार
ओकोच ध्यान,आपल मनमा कर //४//

कस्तकार की अशी करून कहाणी
आवसे आसुको डोरामा हरदम थेंब
पळेव पानीको थेंब,त नीकलेव कोंब
नाहीत बारमाही रव्हसे बोंब च बोंब //५//

****

२३.सासु मोरी साजरी

सासु मोरी साजरी गोजरी
मोला मोठी वा आवळसे
नव बजेवरी मी सोई रव्हुसु
मोरा काम वा करदेसे

सकाळी उठकर साळबोहर
सळासारवन वा करदेसे
दरवाजाकी साफसफाई
चौकचांदन भरदेसे

तोंड धोयशान चुल्हो पेटाव,
दुध की चाय बनायदेसे
मी बीस्तर पर सोई रव्हुसु
वाहां नी चाय वा आनदेसे

आंग धोवन पाणी गरम करशान
मोरसाती वा सारदेसे
मोला काही करनो नही पळ
राणीवानी मोला ठेवसे

सासु मोरी मोठी चुलबुली
पिठ पिसावनला जासे
रोटी बनावन सासु मोरी
कणिक पिठ वा चुरदेसे

मोला त काही कामच नही
एकी लाज मोला आवसे
पर चांगली भेटी से सासु
टुरी वानी मोला ठेवसे

****

२४.मोरो गाव

मोर् गावला से मानको तुरा
जेको नाव से बरबसपुरा

जवरच से गाव को गावतरा
वाहां बोव्हसेती पाणिका झरा

गाव जवर से रेल्वे को रुळ
ओंज्यालका बव्ह गाळीको धूळ

सात वी वरी स्कूल चलसे ठीक
गाव का लोक मोठा च भाविक

कष्ट करशान घाम गाळशेती
संसार को बोझ झीकत रव्हसेती

गाव मा नही पार्टी बाजी चल
सब रव्हसेती सुखलक हिलमिल

मोर गावाको मोला अभिमान
तिरोडा तहसिल मा गाव महान

****

२५.थंडी लगी थंडी
(आला थंडीचा महिना)

थंडी लगण बसी मोठी, इत उत नोको देखो
आता पेटावो सेगळी, झटपट हातपाय सेको //धृ//

बळगयेव आब त थंडी को जोर भारी
नोव्हेंबर,डीसेंबर,जनवरी ना फरवरी
दिवस बुळेपर इतउत नोको झाको //१//

पळ रहीसे करंजा ,आंग कापसे थरथर
बस गयी दातकोळी वाभी बजसे करकर
वरंत भेव बसी से सबपर कोरोना को //२//

सर्दी, खासी ,खोकला,तापजर को से भेव
जावं दवाखाना मात, कसे कोरोना भयेव
करो नियम को पालन,बेकार फिरनो रोको //३//

आत्मबल आपलो नोको ढळन तुम्ही देवो
खुदकी करो निगरानी मास्क बांधकर ठेवो
अंतर ठेवो, भिळ माभी जावो नोको //४//
सासु मोरी साजरी

****

२६.मोरी बहिण लाड़की
(नवाक्षरी)

मोरी लाड़की बहनाई ।
याद आवसे धऴीधऴी।।
यव मायाकोसे पसारो।
मोर पायमा पड़ी बेऴी ।। १।।

लहानपण भी गयेव ।
समजमा नही आयेव ।।
तोरो च हात धरकर ।
चलनो तोला शिकायव।। २।।

मायबापका ए संस्कार ।
बहिन ना भाईकी माया।।
बीह्या भएव बहीनको ।
आम्ही पराया भयगया । ३।।

दूर का रहे तोरो गांव ।
माया तुटनकीच नही।।
रक्षा करूं जीवनभर ।
यादभी भुलनकी नही।। ४।।

आएव राखीको त्यीहार।
भेट बहीण संग होए ।।
दुख सुख एकमेकका   ।
गोष्टी अन्तरात्मा की होय.।। ५।।

नही भुलनको मी तोला।
आमरो अमर से प्यार ।।
मोरी लाड़की बहनाई ।
जिवनभर को आधार ।। ६।।

****

२७.मोरो इमान पोवारी

पोवार माय बाप मोरा, पोवार जात मोरी /
मी पोवारको टुरा मोरी माय बोली पोवारी //

माय वैनगंगा क तटपर बसी पोवार जाती /
सोळदेया तलवार,करणालग् गया खेती //

पयले पोवरीको होतो ध्यास,जेवताखाता /
नौकर चाकर सब पोवारीच बोलत होता //

पर शान शौकत ,अना चक्काचौध बळी /
पोवारी बोलणं शरम लग, मनून मंघ पळी //

पर पोवारीको उत्थान,यवच मोरो इमान /
लिखो ,बोलो,बाचो पोवारी,बळे मानसन्मान //

****

२८.असो एक दिन आए
(चाल- वर ढगाला)

असो एकतरी दिवस आए /
माणुस आकाशमा ऊळत जाए //ध्रु//

आबत खाली मोबाईल आयीसे, वू से लइ भारी /
मोबाईल शिवाई रवत नहीं, लहानलहान टुराटुरी //
कसी लगगयी सबला भाए //१//

वाटशाप,फेसबुक,गुगल,युट्यूब सबमा सेत भारी /
रंगीबिरंगी शान शौकत, सब करसेती नरनारी //
चित्रविचित्र जेवण जेए. //२//

मोबाईल लका कामभी बनसेत,उपयोग चांगलो करो/
जशी रहे सोच तसोच होए चांगला बिचार मनमा धरो//
तब चांगलोच चांगलो होए //३//

मंगल बुध परा घर बनायती, बांधेत महाल माळी /
विमान, हेलिकॉप्टर सारखी,उळत जाय रेल गाळी//
पॅरासुट भी फिको पळ जाए //४//

सप्पा ग्रह परा घर बनेती चंद्र भी सुटनको नहीं/
माणूस लाभी पंख लगेती, मजबुत,सुटनका नही //
सारं सृष्टी परा कब्जा होए //५//

****

२९.खबरदार! मानव अधर्मी

पाप करशान पापी माणूस इतउत पराय जासे
Huज्याज्या करणी करजो तू,,देव ला मालुम होसे//ध्रु//

नारी सिर्फ नारी नही वा आय रतन की खान
ओकलकाच पैदा भया राम, लक्ष्मण,हनुमान
कभी नारी,बहिण,ना कभी माय भी होय जासे
ज्याज्या करणी करजो तु, देव ला मालुम होसे//१//

झाक आपलं अंतर्मनमा जेन सृष्टीकी रचना करिस
मानव का सुख दुःख सब आपलं पोटमा धरिस
कभी ममता मयी,कभी दुष्टसंहारिनी बनजासे
ज्याज्या करणी करजो तु,देव ला मालुम होसे//२//

सब नारिको सन्मान कर, कर कर्तव्य को जाप
उजळोमा करसेस खूप दानधर्म ,अंधारोमा पाप
पर ख्यालमा ठेव, तिनका भी भारी पळजासे
ज्या ज्या करणी करजो तु, देवला मालुम होसे//३//

नारी घरकी शोभाच नही, जशी मंदिर की मूर्ती
अधर्म छोड कर असा कर्म कर जगमा होय किर्ती
खबरदार,अधर्मी मानव ,पलमा क्षती होय जासे
ज्याज्या करणी करजो तु, देव ला मालुम होसे//४//

****

३०.चिऊताई

चिऊताई चिऊताई
पिल्लाईन कर देख
चराव तु दानापानी
कर जरा देख रेख

चारो आण चिऊताई
जाए दरदर फिरं
एक एक कण दाना
वा चोचमा जमा कर

गोदा मा लहान पिल्लु
बाट मायकी देखत
आहाट मिली मायकी
चोच फाळत रेखत

चिऊताई खवावसे
चोचलका मंग दाना
लहान लहान पिल्लु
फुटेव प्रेमको पान्हा

जसी माय लेकरुला
चराव प्रेमको घास
मोटो होयपर राखो
मायबापको च ध्यास

****

३१.परसा
(परसा को झाळ/फुल)

फुल मा फुल परसा
दिस से लालच लाल
ओक बीचमा शोभसे
तुरा सुंदर सो भाल

ग्रीष्म की लगी चाहूल
फाग भी आय गएव
फुल पीवरा देखशां
मन खुशाल भएव

होळी   साठी रंग बने
काळी जलावु कामकी
शेंग फरी लटा लट
ओला उपमा कानकी

जळी ओकी मजबूत
वय थंडी रव्हसेती
कोणी कपार लगाव
दोर दावा बनसेती

पाना रव सेती तीन
जसा डोरा शंकर का
रज तम सत गुण
रव्ह सेती मानुसका

****

३२. आंबा (कैरी)

असी एक अमराई
बुळ सेती तीनचार
ओका पाना झळगया
आयी लटालट बार //१//

आंबा फ-या झोकाझोका
खांदी बगी खालखाल
देख ओला खुशी भयी
कसे आंबाकोच साल //२//

आंबा तोळु दसबिस
ओकी बनावु आमटी
ओन्ज्या सोळुन साखर
मंग लगे खट्ट मीटी //३//

कैरी को बने रायतो
नही भाजीको गा काम
रोटी संग रायतोभी
खावो, करो आराम //४//

आंबा सेती बहुगुणी
मन त सबला भाए
लगे चांगलो खानला
देख मन ललचाए //५ //

****

३३. बाहा / अमलताश

खेत क धुरोपर बाहा को झाळ।
लंबा लंबा लग्या तुरा.........।।
पिवरा पिवरा फुल लग्या सेत ।
दिससेत मोठा साजरा.........।। १।।

फुलकी बनाओ भाजी ना भजिया।
ओको हयता भी होयजासे.......।।
लकडी चांगली वारगयी त।
इंधन क काम मा आयजासे ।। २।।

बाहा को झाळ से बहुगुणी ।
बहु उपयोगी रव्हसे.........।।
जळ,खोळ,पान,फुल,शेंग ।
सब काम मा आवसे.........।। ३।।

आयुर्वेद की दिव्य दवाई.. ।
टॉनिक को काम करसे... ।।
पानाको रस ना पेस्ट भी...।
जलन सुजन काम आवसे ।। ४।।

जळी जलायकर धुव्वा लेवो।
सर्दी,खासी परायजासे......।।
जळी को काढा पिवाओ।
बुखार भी उतर जासे.......।। ५।।

असो बाहा को झाळ उपयोगी।
ना से मोठो वु गुणकारी......।।
मानव जिवन सुखी करनला ।
झाळ लगाओ नरनारी.......।। ६।।

****

३४.निसर्ग

जित उतन से रम्य निसर्ग
सब भगवान को देणं।
असो मस्त सुंदर दिससे
धरणी माता को लेणं ॥१ ॥

कहीं पहाड पर्वत ऊभो,
खाई,खदान ,जंगल।
कहीं निंघसे जिवनदायनी
गित गावसे मंगल ॥२ ॥

कहीं देखु त अथांग सागर,
चमचम चांदी की लाट।
बारू को वू वाळवंट भी
आपसूक चलत जासे बाट ॥३ ॥

हिरवो हिरवो रानं दिससे
शालू लेईस आंगपरं।
एनच निसर्गमा नांदसे
नभचर,थलचर,जलचर ॥ ४॥

परब्रह्म का रूपच आती,
सूर्य ,चंद्र ना तारा।
रक्षण करबिन निसर्गको
मिलकर मानव सारा॥५ ॥

****

३५.चांदा ना तारा

चांदणी रात से ,चंद्रमा कोरो।
आयो उजाळो,एन दुनियामा।।
मी सोयव होतो पलंग पर।
घर   मोठांग क आंगनमा।। १।।

वरत्या चंद्रमा को उजारो।
जवळ आकाशगंगा राणी।।
ज़सो गंगा को झलक पानी।
चांदणी जमी होती मनमानी।। २।।

च्यार ठावा चार बाजूला।
उत्तर मा बुळगीकी खाट।।
वाहा चोरी करनला तयार।
तीन चोर देखत होता बाट।।३।।

ओला सप्तऋषी कसेती।
जवळ सय चांदणी नांगर।।
ओक आधारपरा चुरणी ।
करत होता कास्तकार ।। ४।।

दिवस उन्ती शुक्रतारा।
चमचम चमकसे भारी।।
सबांग चांदणीको उजारो।सजा.।।
द्दष्य दिससे बळो मनोहारी।। ५।।

आंगनमा चांदणी क रातमा।
सोवन की न्यारीच से मजा।।
आता शहरमा जायशानी ।
चार भीतमा भोगसे सजा.।। ६।।

****

३६. जांभुर/जांभुळ

तराकी पार,जांभुर को झाळ
लटालट फरीसेत जांभुर
मोठोजात से ओको बुळ
ना खांदा गयासेत दुरदुर ।। १।।

जांभुर को फळ मोठोगुणी
मधुमेह पर गुणकारी
पचन संस्था स्वच्छ करनसाती
जांभूर से बहु उपकारी।। २।।

ग्यास्टो रहो या इन्फेक्शन
दूर भी करसे अल्सर
जुलाब भी अगर भय गएव
बीजी को पीवाओ पावडर।। ३।।

जांभूळ को झाळ मोठो मजबूत
बिहीरको बनाओ चौकट
बीह्यामा डेर लग जांभूळ की
ना मांडोपर डारीको थाटमाट।। ४।।

झाळपर पक्षी की चलबिचल
किलबिल उनकी रव्ह सुरू
माणुसला छाया ना फळ भी देसे
जांभुर क झाळला नमन करू.।। ५।।

****

३७. मोहु / महू / महुआ.
(चाल-वर ढगाला)

म-यानपर को मोहु को झाळ,
कसो बद बद पळ //धृ //

मोहुको झाळ ना मोठोजात बुळ, जळी गयी दुरदुर /
मोठमोठा खांदा ना ओकपर बांदा, लगगयीसे फर //
जसी दुहीकी संगत जुळ //१//

झळ गया पाना, ठुटा भयेव ना,मंग आयगयी कुची /
लगगया मोहु ना गुणकारी बहु, अंदर रयगयी भुसी //
जुळी एकमेक की नाळ //२//

सकाळीच गया ना बेचकर आया, मोहु सेनोळी भर /
मिलकर सब ना बनाया राब, देया धसाटा खाटपर //
राब रोटी क संग गोळ //३//

झाळपर टोरी ना लटालट फरी, मंग काहाळ्या तेल /
मोहुकी दारु ना जमापुंजी सारु, संसारमा घालमेल //
तोल गयेव गा बिघळ //४//

जसो वापर करो तसोच भरो,मोहु मोठो गुणकारी /
मोहुकी काळी, चुलोला लकळी, कर सैपाक नारी //
जगाओ ना मोहुका झाळ //५//

****

३८. संगी (मित्र)

रामू ना शामु दुहिकी मोठी होती दोस्ती/
संगमाच खेलत होता करत होता मस्ती//

बिट्टी ना दांडू या कवळी गोली को खेल/
इतनउतन संगमाच जाती रव्ह खूप मेल//

लुका छिपी खेलन बस्या सब संगीभाई/
मग रामू पराचं गन देनकी पारी आयी//

कोणी गया इतनउतन झाळमंग लप्या/
नही भेट्या रामूला त कसे कांहा छुप्या//

गन काही सुट नही त जायशानी रुसेव/
अलगजायशान बिचारो एकटोच बसेव//

धावतच आया सब संगी, गन तोरी सूट/
मिलकर खेलबिन नोको करो ताटातूट//

कोणी कोणी संग नोको करो भेदभाव/
एकमाच रव्हन बस्या सुखी भयव गाव//

****

३९. शिंमगा (शिंवगा सण)

फाग फागुन ना,होरी
सण शिमगासे भारी
ओकी से रंगत न्यारी
खूष   भया नर नारी

जमा लोक, भयीं दाटी
होरी जरावन साठी
कोनी खेल आटी पाटी
खैल कब्बडी दुताटी

करो होली का दहन
पूजा करो तन मन
माला गाठीको अर्पण
शुध्द मन को दर्पण

रंग भरी पिचकारी
लगी गुलाल की झळी
रंग अलग रंगत न्यारी
जित ऊत खुशी भारी

साल को आखीर सण
इस्ट देव को स्मरण
ठेवो प्रफुल्लित मन
तब सुखी रहे तन
****

४०. बेधुंद भोवरा

मन फिरवी रानोरान,
जसी तलवारीची धार ।
कुठ त्याचा नाही ठिकाना,
त्याचा अंत नाहीं ना पार ॥

मनाचा कुठ अंत नाही
ना धरती ना निळे आकाश।
मनानेच सर्व कामे करती
नाहीतर बनेल गळ्याची फास ॥

मनाला मारून मैदा करा
त्याचा काढावा तेल।
बिन तेलाची वात जळे
सर्वांगी त्याचाच खेल ॥

मन गेला तर जावू द्या
पर नोको जावू द्या शरीर।
खिचनार नाही कमान
मंग कैसा लागेल तिर ॥

मन फिरवी गोलगोल
जसा पाण्यात फिरे भोवरा।
धरील्याने तो धरवेना
मग कैसा लागेल थारा ॥

म्हणून मनाला ताब्यात ठेवा
शुद्ध ठेवा आचारविचार।
दोन दिवसाची जिंदगानी
होईल भवसागर पार ॥

****

४१. छत्तीस कुर का छत्रिय पोवार

माय. बाप पोवार sss पोवार जात मोरी /
मी पोवार को टूरा sss माय बोली पोवारी//ध्रु//

धारा नगरी को राजा भोज ओका आमी वंशज /
सुवर्ण युग की सुरवात, मालवा पर होतो राज//
जेक शासन कालमा, होती सुखी जनता सारी/
मी पोवार को टूरा sss माय बोली पोवारी //१//

छत्तीस कुर् आमरी सेती, वैनगंगा क तटपर/
अंबुले, कटरे,कोल्हे,गौतम,चव्हाण, तुरकर//
जैतवार,ठाकरे,टेंभरे, डाला,पटले,ना चौधरी/
मी पोवार को टूरा sss,माय बोली पोवारी//२//

पारधी,पुंड,ना फरीदाले, बिसेन,बघेले,परिहार/
भगत, भैरम,राजहंस, येळे, रंधिवा ना भोयर//
रनमत,राणा,ना रावत, राहांगडाले बिरादरी/
मी पोवार को टूरा sss माय बोली पोवारी//३//

सोनवाने,हरिनखेडे, क्षिरसागर ना शरणागत/
रिनायत,ना ,सहारे,बोपचे,छत्तीसवी हनवत//
मोठोजात से पसारो,मोठी आमरी बिरादरी/
मी पोवार को टूरा sss माय बोली पोवारी//४//

अग्निकुल,राजपूत, वंश,क्षत्रिय पंवार/पोवार/
कुलदेवी माय कालिका,करून सुमरण बारंबार//
गोड़ बोलीसे पोवारी,जागो सबजन आतातरी/
मी पोवार को टूरा sss माय बोली पोवारी//५//
जय जय राजा भोज

****

४२. बरसात का नक्षत्र

रोहनी चली गयी आता ,
कास्तकार भया सब चेता.
चलत मिरुग न टाकीस छाया,
बरसातका दिवस आया.

अरदळा न जोर धरीस ,
पुख न डंका मारीस.
पुख,फुंडरुस तुफानी,
रुमझुम बरसेव पाणी.

असरका को झंन्नाटा ,
मघा,पूर्वा पुरडट्‌टा
मंग उतरा उतरेव
ना ,हत्ती डखरेव

घरघर करत आयो हत्ती.
वर बिजली चमकती
सीता स्वाती पळगयी राती.
पिकगया माणिक मोती.

मंग लगी मुर ना पानी गयेव दूर.

****

४३. मोरी कविता का रंग

कविता का केतरा अलगलग रंग
चारोळी,दसपदी ना कधी अभंग।। १।।

षडाक्षरी, अष्टाक्षरी,गाणा की चाल
सुंदर सप्तरंग   पोवाळा को ताल।। २।।

हर कल्पना की लेसे उची भरारी
कवी,साहित्यिक,सद्गूणी,सस्कारी।। ३।।

कविता कभी सजीव,निर्जीव परा
हरघळी फुटसे कल्पनाको नवो झरा।। ४।।

शब्द शब्द की माला, अलगलग भाव
रंगीबेरंगी कविता ना अलगलग नाव।। ५।।

****

४४. जिवन साथी

जिवन एक अनमोल रतन
ओकी रव्ह वाकळीतिकळी बाट
कही उबळ खाबळ,नदी नाला
कही पहाड पर्वत, उचो घाट

जिवन एक भवसागर आय
एक समजदार साथीको साथ
सुख दुख मा भी संग संग चले
हो जिवनसंगीनी या प्राणनाथ

सुशिल,सदाचारी जिवनसाथी
संसारको गाळो दुळुदुळु जासे
अगर एक बिघळ गयेव त
दुर्गती, ना दुर्व्यसन लगज़ासे

जीवन साथी ,नैसर्गिक गरज
सबला से वु रव्ह नर या नारी
भवसागर ला पार करनला
पाहिजे आपलो कोनी हीतकारी

कर्तव्य दक्ष ना धर्मपरायन्ता
एकपरच संसार की से निव
एक जिवनसाथी बिना अधुरो
रव्हसे एकटो जिव सदाशिव
...... (बारा अक्षरी)

****

४५. शब्दका घाव, शब्दकिच मलम

बोलण क पयले बिचार करले
शब्द संभलकर बोल
लिनता,शालीनता लका रव्हनो
जीवन से अनमोल //१ //

भाग्यलका मिलीसे नरतन काया
ओको चुकाओ मोल
नही कोनी सगा,सब सेती पराया
नोको जानदेवु तोल   // २//

शब्द ला नही रव्हत हात ना पाय
शब्द संभलकर बोल
शुध्द आचारबीचार धारण करले
लीनता को कर मोल //३//

जगमा दुही मोठी बदनाम सेती
कळवा शब्द ना औषधी
मनको किवाळ खोलकर देख
दुही लगसेती,मोठी व्याधी //४ //

शब्द रुपी बाण निकल गएव
वापस कभी वु नही आव
मणुन पयले करणो बिचार
सब पर ठेवो शुध्द भाव //५//

अहंकार सोळ, मिठी बानी
कर शब्द शब्द को मोल
शब्द लका फायदा / नुकसानी
शब्द को संधान से अनमोल //६//

****

४६. जोडी तोरी मोरी

तोरी मोरी सुंदर जोडी
ज़सी पतवार ना नाव
तू सरीता ना मी सागर
जसा रव्हत भक्ती भाव //१//

भाव बिना भक्ती अधुरी
प्राण बिना काया
लीनता से उचो मारग
सगा भी होसेती पराया //२//

पानी बिना तरा सुनो
झाळ बिना नही जंगल
नातो दीवो ना बाती ज़सो
सब होयजाये मंगल मंगल //३//

सुख दुख मा साथ तोरो
सावली सारखी संग चल
कसोभी संकट आए
नही होय चलबिचल //४//

ज्याली बिना भोवरा अधुरो
काहान्को फीरनो, होय बंद
तोरो मोरो एक बिचार
दुही जनको एकच छंद //५//

तोरी ना मोरी जोडी
रव्ह शुध्द आचार बिचार
एकमेकाला रव्ह आधार
होयजाए भवसागर पार//६//
****

४७. राजा राणी कारी मातीका

कारी कारी माती ना ओकमा राजा राणी
सब बन्या कारी मातीका वाच कहाणी //धृ //

पाच तत्व की काया,जेकमा मातीको वास
आप,तेज,वायु,पृथ्वी ना पाचओ आकाश
एक पट से जमीन ना पाच पट पानी // १//

काया वाच राणी ना आत्माराम राजा
कारी मातीकोच वास नही कोनी दुजा
वोकौमाच जन्म्या पशुपक्षी ,राजा रानी //२//

आमरी पोवार जात, पोवारीच मायबोली
क्षत्रिय कुलमा पैदा भया छतीस कुरवाली
वंशज राजा भोजका जेकी लीलावती राणी//३//

वीक्रमादित्य पासून सुरू भयीं वंशावळी
सींहासन बत्तीसी ना बत्तीस होती पुतळी
सुखी,संपन्न जनता,मालवा की राजधानी //४//

भोज को एकछत्र राज,अटक त कटकवरी
पूज्य सै माय गडकालीका,राज धारानगरी
सुजलाम सुफलाम माय वैनगंगा को पानी //५//

कारी मातीको काम नाव ओको कास्तकारी
मातीमाच जनम ना मातीमाच दुनिया सारी
नाहाय कोनी हीतकारी एन कारी मातीवानी //६//

****

४८.बरसात

हरसाल एक सालमा तिन दिवस आवसेती ।
उनलाच हिवाळो, उनहाळो ना बरसात कवसेती।।

हिवाळोकी थंडी,उनहाळो की भारी से तपन ।
बरसातको पाणी पळेव ,जितऊत खपनच खपन ।।

बरसात रोहणी पासून सूरू होसे ना हतीवरी रवसे।
खेती बाड़ी को काम भी बरसात माच आवसे ।।

पाणी लका जंगल हिरवा भया हिरवो भयोव रान ।
जसी हिरवी शाल आंगपर,कोयार करसे गूनगान ।।

बरसात सूरू भई की ,मेंडकाभी टरायकन बोलसे ।
जिव जंतूला ऊलहास आयेव, सरप भी डोलसे ।।

बरसातमा सण आवसेती,अखाळी,जिवती,नागपूजा ।
राखी ना ,कानूबाको सण,पोळाला बैलकी पूजा ।।

बरसात चांगली भई त सबक मनमा खूशयाली बहू ।
कधी पळेव सूका,सूकेव थूका कसे कोण घर जाऊ ।।

****

49. मोहतूर

खेतीक काम ला सूरवात करनला मोहतूर कसेती ।
धरतरी मायकी पूजा सब कासतकार करसेती ।।

लगी बरसात, रोहणी भी गई,मिरग भी लग गयेव ।
पयलो मोहतूर खार भरनको, ओला तयार भयेव ।।

भई तयारी,काहाळीस बखर ओला जूपीस जूवाळी ।
बखरला भ-या, ना बारती,ना सिंगरा बैलकी जोळी ।।

चूंगळीमा धरीस धान,ना चाऊर,बिजबोहनी हातमा ।
गळूमा पाणी,ना कूकूकी पूळी,धरशान गयेव खेतमा ।।

जूपीस बखर,जोळीस हात धरतरी की पूजा करीस ।
पाच कूळो की खार बखरल का पटणारीच भरीस ।।

दूसरो मोहतूर परा धरन को पाच मूठ खार की पूजा ।
लगाईस पराडार,परा सरेपर आखीर बजाईस बाजा ।।

तिसरो मोहतूर धान काटनको चरू धरशान आयेव ।
करीस चूरणी, धान का पोता , मनमा खूश भयेव ।।

असा खेतीका तिन मोहतूर,धान पिकावनकी आशा।
पळेवथेंब,निकलेवकोंब,नहीत बोंबचबोंब की दशा ।।

****

५०.बैलबंडी(बंडी/गाळो)

कास्तकार की आनबान शान
जेक आंगनमा उभी बैल बंडी
ओलाच सबजन कसेती गाळो
लाकळी रव्ह या रव्ह लोखंडी।। १।।

गाळोला दुय चाक गोलगोल
बुदला,खांब,पुठ्ठा लक बन्या
बुदलाला रव्हसेत 2आवना
पुठ्ठा खिल्ली लका से तन्या।। २।।

सामने धुरखीली,मंघ उलट
लम्बा लम्बा सेती दुय धुरा
सय पावटनी,ना एक हरणी
बीचमा रव्हसे एक मंझारा।। ३।।

लोखंडी आस्कुळ लाकळी डोंग
दुय पीहनी,ना   दुय सितारा
दुय खिल्ली,ना एक दाबखुटा
मंझारा मा सेती चार कनंगरा।। ४।।

दुय शिवर,जोता ना जुपना
सोळा उभारी,एक जुवाळी
खात फेको,या चुरनो करो
गाळौमा आनो काळीकुळी।। ५।।

आता गाळो सब बीसर गया
बैल पालन को त्रास आवसे
ट्रॅक्टर लका सब काम होसे
गाळो बीचारो कोंनटोमा रोवसे.।। ६।।

****

५१, मोरी खेती

सुपीक मोरी खेती
मोठी मोठी बांधी
कन्हारी माती
धुरा पार
भी सेती
खेती
ला

धुरोला तिर तोर
ओला देखशान
मन विभोर
जसो चंदा
चकोर
होसे
ना

खारी दोरी भरेव
करेव चि-हाटा
प-हा धरेव
चिखलभी
करेव
जल्दी
च

खांडी कोंटा करेव
तिन दिवसमा
प-हा सारेव
ना ढोलाभी
भरेव
मंग
मी

यंदा वर्षा को पाणी
भुर्र भुर्र पऴ
केविलवाणी
ज़सी रव्ह
शहानी
दिस
से

पळे़ पाणीको थेंब
धान फसलला
निकले कोंब
ना होनकी
बोंबच
बोंब
गा

****

५२. बरसात की तयारी

चल चल ग तारा sss जाबिन बांधी परा //ध्रु //

आयेव अखाळ, लगी रोहनी /
लवकर मिरुग को पळे पाणी //
आवर आपलो पसारा ..चल चल ग तारा sss

पिवन को पाणी संग मा धर /
हातमा धर ओळगा ना कुदर //
टिकास धरुसू खांदपरा ..चल चल ग तारा sss

खेत मा धुरोपर टाकबिन माती /
तिर, तोर, मुंग लगावन साती //
बिजाई को धर झोरा ...चल चल ग तारा sss

मिरग मा भरबिन खारीदोरी. /
चिर्हाटा करबीन खेती सारी //
अरदळा लगेपर परा... चल चल ग तारा sss

फुकफुंडरूस मोठो तुफानी /
लगाय लेबिन परा पाणी. //
चिखल करबिन जरा..चल चल ग तारा sss

अस्सरका की सुटी पेंडी/
धान पिकेत कुळो खंडी//
होय जीवनला आसरा .. चल चल ग ताराsss

****

५३.तुरसीको बिह्या

कालनेमी दैत्य न संतान साती ।
माय लक्ष्मी की आराधना करीस।।
राक्षस कुलमा ओन जन्म लेईस।
ना लक्ष्मीजी न वृंदा नाव धरीस।। १।।

शिवजीक फेके गयेव तेज लका।
समुद्र मा जालन्दर पैईदा भएव.।।
करीस बीह्या ओन वृंदा संग ना,।
देव ईन संग युध्द करनला गएव.।। २।।

पतिव्रता होती जालंदर की वृंदा।
त विष्णुन सतीत्व करीस हरण ।।
वृंदा न श्राप देईस विष्णुजी ला।
जब भए गयेव जालंदर को मरण।। ३।

वृंदा जालंदर संग भयगयी सती।
ओणच जागापर निकलेव पौंदा।।
अमर भयगयी तुलसी नाव लक।
पतिव्रता,सत्यवती, सती वृंदा ।। ४।।

विष्णू ला श्राप देईस वृंदा न तब !
विष्णू बनेव गोटा, नाव शालिग्राम !!
बीह्या भयेव तुळशी क संगमा!
सती तुलसी (वृंदा) गयी निज धाम!!५!!

घरघर लगाओ तुलसी ब्रींदाबन।
ओन्ज्या भगवानको रवसे वास।।
खासी,कोकला,दमा ना बुखार ।
तुलसी रस,बीमारीको करसे नास।। ६।।

जीवनदायीनी गुणकारी तुलसी।
जेक गरौमा रहे तुलसीकी माळ।।
शुध्द होसे तनमन,सब बिचार ।
कदापी जवर नही आव काळ।। ७।।

****

५४.मामा गावकी मजा (अकराक्षरी)

लहानपणकी का सांगु मजा।
मामा गावकी सुगंधीत माती।।
नानाजीला मीन नही देखेव।
पर मोरी मामामाय च होती।। १।।

मामाको गाव होतो बहुत दुर।
नोहोती फटफटी,सायकल।।
जानला चांगला रोडभी नही।
कधी खासर,कधी त पैदल।। २।।

मामा घरं मोठोजात आंगन।
मोराभी चार होता मामभाई।।
उनको संग कवळी,ना गोली।
खेलण चांगलीच मजा आयी।। ३।।

बाळी मा मनमानी झाळ झुळ।
मोठोजात आंबाको होतो झाळ।।
लटालट फरत होता आंबा ।
बदबदा पळत होता पाळ ।। ४।।

गहू की सेवई आंबा को रस ।
मनमानी आमी पिवत होता ।।
कोनीकीभी आयकत नोहोता।
आपलं तालमा नाचत होता।। ५।।

मामाक गावकी याद आवसे ।
मन मारकर मी भी रय ज़ासु।।
गया दिवस त आवत नही ।
मामा क गावकी बाट देखुसु.।। ६।।

****

५५.महाभारत

महाभारतक युद्धकी तयारी
दुर्योधन,अर्जुनला बिचार भारी
आयेव् संकट मा कोण हितकारी
दुही गया द्वारका, जंहा कृष्ण मूरारी //१//

सोयव देखीन कान्हा ला
दुर्योधन जायकर बसेव उसोला
अर्जुन विचार कर,बसेव पायतला
उठेव कृष्ण मुरारी देखणं बसेव् दुहिला//२//

श्री कृष्ण कसे दुर्योधनला
मांगले ,का का पाहिजे तोला
एकांग मी, दुसरं आंग से मोरी सेना
दुर्योधन कसे , मोला सेनाच दे नारायणा//३//

अर्जुन कसे,तुम्ही मोरकर
कृष्ण कसे,भरोसो का मोरपर
असली माखन, सेनाच दुर्योधन कर
अर्जुन कसे का भयेवं मोरकर से माखनचोर //४//

महाभारत युद्ध,सुरू भयेव
अठरा दिवस वरी लढेव गयेव
वंश मिटेव कौरव को,ना कोणी रहे्व
तबच महाभारत ना गिता ग्रंथ लिखे गयेव//५//

****

५६.सती अनुसया

निर्थ लोकमा सती जन्मी , जेकी कीर्ति महान /
अत्री मुनिकी सती अनुसयाजी पतिव्रता जान //

आग लगाईस नारद मुनीन स्वर्ग मा जायकर/
सांग, सब नारी मा पतिव्रता से अनुसया नार//

लक्ष्मी,सरस्वती, पारबती तिन्ही नाराज भई/
सांगसेती वय गरहानों पतिदेवला,चलकर गईं//

तुम्ही तीन देव मिलस्यानी नीर्थलोकमा जावो/
अनुसयाको भंग करो सतित्व ना वापस आवो//

तिन्ही देव साधु बनगया ना मंग गया चलकर/
अलख जगाईन जायस्यानी अत्रीजी क द्वारपर//

जेवन पाहिजे आमला,वाळजो नांगवी होयकर/
सती पतिव्रता नार अनुसयाला आयेव बिचार//

मंत्रिस पानी मारिस देवपर, पतिव्रता को सार/
लहाना बालक बनगया देव झुलाव पारणापर//

मालुम भयेव तिन्ही देवीला गयी वहां चलकर/
माफी मांगीन अनुसयाला ना सोळाईन भ्रतार//

त्रिदेव क कृपालका दत्तात्रय को जन्म भयेव/
होउच दि्स पुनवा,पांडपुनवा म्हणुन पुजे गयेव//

****

५७.अनमोल से जिवन

आयेस जगमा बिचार करले
नोको जानदेस तोल
निती नियमलक चलरे बाबा
जिवन से अनमोल ।। १।।

जिवकी जिवलंग लाळकी राणी
संसारमा निभाव रोल
घळीभर आणे डोरामा पाणी
मंग जिंदगी फोलच फोल।। २।।

बांधेस मोठी महालमाळी
नही पैसाको मोल
दुय दिवस की नश्वर काया
नसलोच बजाव ढोल।। ३।।

आवळकी लेयेस मोटरगाळी
तोरो पैसा से अनमोल
कोणी नही आवनको संगमा
एकटोच जाजो खोल।। ४।।

मोह माया को यव से फंदा
सब सेगा पोलंम पोल
नश्वर काया मातीमा जाए
जब फुट जाये रे ढोल।। ५।।

गुरुदेवक शरणमा जायेके
आता तु खुदला तोल
जाय गडकालीक चरण मा
समज जिवन को मोल।। ६।।
ॐॐॐ

५८.शुध्द हवा प्रानदायी

पाच तत्व जीवनका
अग्नि,हवा,पृथ्वी,पानी
आए पाचवो आकाश
हवा तत्व बहुगुणी

भरी हवा से सबांग
नही नजर मा दिस
ज़सो ऊस मा साखर
नही दुध, घिव भास

रहे रम्य वातावरण
शुध्द हवा वाहा खेले
झाळी, जंगल रहेत
शुध्द हवा सब मिळे

शुध्द हवा लेनसाती
फीरो सकाळी बाहेर
तन ,मन प्रफुल्लित
खुली हवाको आहेर

झाळ एकतरी लगे
असो प्रण सब करो
शुध्द हवा प्रानदायी
कास जिवनकी धरो

****

५९.जातो परकी ओवी

असो एक माळी गा निर्गुण निराकार
बाग लगाईस सुंदर,जो बाळा जो जो रे.//१//

रोप लगाव सुंदर,खाल्या शेंडा वर बुळ
कलश पर ऽदेवुळ,जो बाळा जो जो रे.//२//

साळेतीन हातको खेत,वरत्या धर नांगर
बैल जुपीस च्यार, जो बाळा जो जो रे.//३//

एकवीस स्वर्ग पर बीहीर,सर्वांग पाझर
माळीन सत्रावी सुंदर,जो बाळा जो जो रे.//४//

चौदावी को मुळ,वाफा सेत बाहातर
एकविस आळा सुंदर,जो बाळा जो जो रे //५//

त्रीगुण त्रीकुटी, चवथी जाण गा तुर्या
सबदुन वरत्या माया,जो बाळा जो जो रे //६//

ओन्ज्या उलटी गंगा,पाणी आळोपरा
सेती त्रि देव मोरा,जो बाळा जो जो रे //७//

सात गा चकर सप्त सागर को फेरा
माला फिर मनी तेरा, जो बाळा जो जो रे //८//

एक नारी बतीस पुरुष,एकमाच संसार
पाच तत्व को शरीर,जो बाळा जो जो रे //९//a

सबमा से भगवान,माया को पसारो
कर्म चांगला करो, जो बाळा जो जो रे //१०//

****

६०.परी राणी

परी राणी परी राणी , गोरी गोरी पान ।
गोलगोल पंख ओका,दिससेती छान ॥धृ॥

एक दिवस परी राणी, सपनमा आई ।
चल जामीन फिरनला, कसे घाईघाई ॥
सुंदर सलोनी तोला,कसे देखावुन रान ।
गोलगोल पंख ओका,दिससेती छान ॥१॥

धरीस मोरो हात ,ना लेगीस बगीचामा ।
बहुत सारी परी राणी भयी वाहां जमा ॥
खेल देखशानी ओको सर्प गयेव भान ।
गोलगोल पंख ओका,दिससेती छान॥२ ॥

लुकाछिपी खेलन बसी सब मोर संग ।
फुल होता बगीचामा अलगलग रंग. ॥
खेल खेलनमा मोरो लगगयेव ध्यान. ।
गोलगोल पंख ओका,दिससेती छान॥३ ॥

थकगयी जायशानी झाळखाल्या बसी. ।
धावत आयी परीराणी कसे काहे रुसी. ॥
आकाशमा ऊळबिन नोको होऊ हैरान ।
गोलगोल पंख ओका,दिससेती छान॥४ ॥

ऊळान बसी परीसंग हात मोरो सुटेव ।
खाल्यापळी जमीनपरा सपनच तुटेव. ॥।
धावत आयी माय , तब जानमा जान. ।
गोल गोल पंख ओका,दिससेती छान॥५ ॥

****

६१. जीवात्मा

जीभ क स्वादसाती, कोंबळा बकराको जीव रेsss
निर्दयी लोकहिनला कशी नही कीव रे २ //धृ//

कोणी धरसेती पाय कोणी चलाव सेती सूरी /
खाणार सब जमा भया शिल्लक नही खुरी //
कोंबळा को जिव जासे कर चिव चिव रे //१//

जेवन ठाव सामने उभी रव्ह दारूकी शिशी /
परिवार क सामने मंग खाल्या पळी मिसी. //
जीभ क स्वाद साती ओळांडेस निव रे sss//२//

सब जिवात्मा या रव्ह से भगवान को वास /
मंग काहे माणूस कर से आपलोकोच नास //
आखिर आये घळीं मग करजो टिव टिव रेsss//२//

मानव को धर्म से जीव की सेवा करणो /
यंहा की करणी से मंग यंहा नीच भरणो //
जाग माणूस आता तरी ओळख शिव रेsss//४//

****

६२.जिवन पानीको बुलबुला
(तर्ज:-कब खुलेगा तिजोरी का ताला)

केतरो समजावू मी दुनियाला,हो हो /
यव जिवन से पानी को बुलबुलाऽऽऽऽऽ
आयकोना,आयकोना,आयकोना२//ध्रू//

सोनो सरसी या काया,माती मां जाए वाया /
लख चौ-यासी भोगस्यानी,मानव जन्म मां आया
बिरला जानतरहे अलबेला,हो हो यव जिवन//१//

मुष्कीललक नरतन पाया,मायामा आमी भुलगया
गर्भवासमा उलटो लटक्या बाहेर आयकर भुल गया
भूल गया मायबाप ला, हो हो यव जिवन//२//

मोहमाया को फंदा तोळ ,प्रभू संग तु नातो जोळ
जिवन से यवं अनमोल, बुरी आदत सप्पा सोळ
सुमर सूमर लें भगवान ला ,हो हो यव जिवन//३//

****

६३.ओवी (भरे घरको तरास)

मंगरवार दिन - मनमा मोरं ध्यास
भरे घरको त्रास - खंडोराया //१//

एकटी करू काम- नहीं कोणी आसरो
मर मोरो सूसरो- खंडोराया //२//

सुसरो मरेपरा-ना मोरं डोरा आसु
मर वा मोरी सासू-- खंडोराया //३//

सासु मरेपरा -तुटेव वु आसरो
मरं मोरो भासरो- खंडोराया //४//

भासरो मरेपरा- डोरा आवसे पाणी
मरं मोरी जिठाणी- खंडोराया //५//

जिठाणी मरेपरा- हाथ आयेव घर
मर मोरो देवर- खंडोराया //६//

देवर मरेपरा-मंग करून छंद
मर मोरी नंनद- खंडोराया //७//

नंनद मरेपरा- दुयच राजा राणी
मज्जा वा मनमानी- खंडोराया //८//

भाव भक्ती करून- धरून सेवा भाव
पुंजून महादेव - खंडोराया //९//

****

६४.जवानी को उंबरठा

जवानीक उंबरठापरको दिवो
अचानक निस्तेज भयेव
सबांग धावाधाव मची
सब जहांक वाहां रहेव

ना कोणीकी दयामाया ना चिंता
दिवोमाको तेलच आटेव
मुलमुल देखत होता मायबाप
जसो कलेजाच फाटेव

पाणी आटेव बापक डोराको
पापणीही वार गयी
ना अंतकरणमा तरमळ लगी
दुसरी आशाही नहीं रही

माय न डोरा क आशु ला देईस बाट
आसु गालपर बोहत सुटया
माया क संसार सागरमा का
भवबंथ सप्पा तुटया

सुखी संसार को चेंदाळा ना मंग
चारही बाजुला अंधारो भयेव
देखतादेखता जवानीक उंबरठा परको
दिवोही बिझाय गयेव

****

६५.श्रावण बाळ (चाल-मेरे मन डोले)

शशांतनु पिता, ज्ञानेश्वरी माता। बेटा श्रावण कुमार रे,
माय बाप क चरण मा //धृ //

रात्तदिवस ऊ सेवा करसे ,मायबाप भगवान
आज्ञाकारी बेटा श्रावण,का करु गुणगान
तिर्थ करा्वन मायबाप ला, भयगयेव तयार रे //१//

दखो ओन कावळ बनाईस,बांधीस गाठण गाठी
ओंज्या माय बापला,तीर्थ करावण साठी
खांद्यपर कावळ,चलेव तिर्थला,तपन भरमार रे//२//

फिरताफिरता तिर्थ देखता,,चलेव श्रावण बाळ
मायबापला तहान लगी, टपशान होतो काळ
कावळ ठेईस झाडखाल्या,चलेव तलाक पार रे //३//

झारी बुळाईस पाणीमा वा,आवाज बुळबुळ कर
टपेव होतो राजा दशरथ, ओन चलाईस तीर
हायबाप कर,ना तळफळ,बाळ श्रावण कुमार रे //४//

सांगीन हकीगत दशरथला,सोळीस ओन प्राण
मालुम भयेव मायबापला उनन त्यागीन ज्यान
मायबापकी सेवा करशान,महेश ऊ अमर रे //५//

मायबापकी सेवा करबिन, त भेटे मंग मेवा
नहीत,मंग होय पस्तावा, करबिन देवा देवा
नोको दुखावू मायबापला सुखी होय संसार रे //६//

****

६६.संस्कार

संस्कार का मुख।
बाप की सावली।।
माय वा माऊली।
आय बापा ।। १।।

संस्कार प्रकार।
अलगच देख ।।
गर्भ,सामाजिक।
धार्मिक भी ।। २।।

वू उप-नयन ।
बाल, सदाचारी।।
आध्यात्मिक भारी।
सबमा से. ।। ३।।

गर्भ को संस्कार।
अभीमन्यु साती।।
ध्रुव गा जपती।
विष्णु नाव ।। ४।।

वू उप-नयन ।
वाल्यान धरीस।।
मायागा सोळीस।
संसारकी ।। ५।।

मातीला गिलावा।
वू कुंभार देसे।।
संस्कार घळसे।
ओकवानी ।। ६।।

सब शुध्द ठेवो।
आचारबिचार।।
भवसिंधू पार।
होयजाये ।। ७।।

*****

६७.असी कसी गत भयी

गावक जवर की गावखारी
मी धान लगायव दाटफरी
ना पाणी पळेव मोठो भारी
यंदा मिटे कहेव चिंता सारी

धान दटकर आवन सात
ओला मार्‌व रंगरंग खात
मेहनत करेव दिवस रात
कहेव,फसल देये यंदा साथ

मस्त आयेव भरमार पाणी
धान आयेव खुप मनमानी
का सांगू किस्मतकी कहानी
खोळकिळा लक धूळधानी

पोटरामा कोमानेव कोंब
पांढरो च निकलेव लोंब
भगवान को भयेव् कोप
ना भई सबांग बोंबच बोंब

सारी मेहनत अकारत गयी
अशी कशी या दुर्दशा भयी
जहाँ की इच्छा वाहां च रयी
अशी कशी या गत भयी

****

६८.मन को घाव

वरत्या लक दिस नही
अंतर्मन को घाव!
पर चेहरा परा उमटत रव्हसे
ओकोच हाव भाव!!

मन फिरावसे रानोरान,
जसी तलवार की धार ।
ओको कहीच नही ठिकाना,
नाहाय अंत ना पार ॥

मन आय अकराओ इंद्रिया
ना धरती ना आकाश ।
मन लकाच सब काम होसेती
नहीत बनसे गरोकी फास ॥

मन ला मारकर मैदा करो
ओको काहाळो तेल ।
बिन तेल की बात जरसे
सबांग ओकोच खेल ॥

मन गयेव त जान देव
पर नोको जान देव शरीर ।
कमान जब खिचो नहीं
मंग कैसो लगे तिर ॥

मन फिरवसे गोलगोल
जसो पाणीमा फिर भोवरा।
धरेलका सपळ नही
कसो लगे ओको थारा ॥

मणून मनला काबूमा ठेवो
नोको लगनदेव घाव।
दुय दिवस की जिंदगी
ठेवो शुद्ध भक्ती भाव॥

****

69.बेटी की आर्त हाक
(तर्ज:-मा अपने आचलं मे छुपाले)

एक बात मी कऊ का बाबुजी
याद मा तुमरं रोऊ का बाबुजी
का याद मोरी आव नहीं //ध्रु//

लहानपणमा मोरो खुप लाळ प्यार क-यात/
लहान लहान घास मोर तोंडमा भ-यात//
घोळा बनकर ,मोला आपलं पाठपर ध-यात/
इतर ऊत फिरायात आनाकानी नही क-यात//
आता वा याद नहीं आव का बाबुजी
याद मा तुमरं रोऊ का बाबुजी
का याद मोरी आव नहीं.//१//

आयी दिवारी,मोला नविन कपळा लेयात/
स्कूल जाऊ, खाजो खानला पैसा देयात//
मेहनत, कष्ट क-यात, कमी नही क-यात/
शिक्षण चांगलो पाहीजे याच असं ध-यात//
मोठी भयी बिह्या की घाई पळगयी बाबुजी
याद मा तुमरं रोऊ का बाबुजी
का याद मोरी आव नहीं.//२//

बिह्या भयेव थाटमाट को खर्च भी क-यात/
सोनो चांदी पैसा अदला सबकाही देयात//
लहानपण की याद,माया सब बिसर गयी/

संगमा तुमर खेली कुदी कसी परायी भयी//
संसार की अशीच रित से ना बाबुजी
याद मा तुमरं रोऊ का बाबुजी
का याद मोरी आव नहीं.//३//

घळी घळी बचपन की वा याद आवसे/
सुखमा से टुरी तूमरी पर अंतरमन रोवसे//
सोनोको पिंजरा से पर खानला धावसे/
अर्धांग मायघर अर्धो सासुरवास रव्हसे//
नोको हलको मन करो ना बाबुजी
याद मा तुमरं रोऊ का बाबुजी
का याद मोरी आव नहीं.//४//

****

७०.मामा को गाव

मोरो माय को माहेर होतो बहुत दूर।
मामा को गावं जानकी लगी हुरहूर।।

स्कुलला सुट्टी लगीं धावत धावत घर आई।।
मायला कयेव मामागावं जानकी कर घाई।।

बस लका जल्दी मामा को गावं जबिन।
आंबा को रस ना पातर रोटी खाबिन।।

सेवाई की खीर ना गहू की गरम रोटी।
भाजीला आलूबगन, गवारशेंग, बरबट्टी।।

मामा मामी साजरा जसा राणी राजा।
उन्हारो को सुट्टीभर मस्त करबिन मजा।।

****

७१.तपन

२२ मार्च ला दिवस रात भया बराबर
मंग दिवस मोठो होसे उन्हारो भर।

उन्हारों मंजे तपन की होसे भरमार
आंगभर पसीना पानी की मारामार।

सकाळ पासुन होसे तपन को सर्राटा सुरु
बाप कसे बेटा ला तपनमा नोकों फिरू।

कूलर पंखा लगायशान घरमा सोव
आब कोराना को सबलाच से भेव।

तपनलका आहत भया पशुपक्षी नरनारी
कबी तपन कबी सावली धन्य प्रभु माया तोरी।

****

७२.पूजा एक संस्कार

चांगला संस्कार, ईश्वर भक्ती
मीलसे ऊर्जा,जबरदस्त शक्ती
संत कसेती, घळीभर देवद्वार
ओकलक साधती,मुक्ती च्यार

मनमा पाहिजे भाव ना भक्ती
संस्कारी संतान,तबभेटे मुक्ती
बुध्दी की देवता,गणपती पूजा
वीघ्नहर्ता वू, नही कोनी दुजा

ऋध्दी,सीध्दी दुय ओकी नारी
करसेती धन वर्षा , सुखकारी
शुभलाभ दुय टुरा,परोपकारी
तसा टुराटुरी पाहिजे संस्कारी

एक निष्ठ भाव तब साधे भक्ती
जब साधे भक्ती तब भेटे मुक्ती
संतानपर पळेत चांगला संस्कार
तब होए आपल कुलको उध्दार

सबजन इष्टदेवकी पूजा करसेती
कोनी घरमा कोनी मंदिर ज़ासेती
सबआंग देव,सुध्द आचार बिचार
पूजा करो देवकी सुखी होय संसार

****

७३.आंबा

आंबा की आमराई फरीसे बाका
सबआंग लगगयाआंबाका झोका
एक झोकाला आंबा सेती नवदस
देख शानी मन ललचासे बरबस

मोठोजात बुऴ ना लंबालंबा खांदा
उनक आऴपमा लपायजासे चांदा
लटालट पाना ना मोठोजात बार
ओक ओझो लका बग गयी डार

आंबा संग नोन तिखो की चटनी
लगसे सुरस जिभ ला देसे पटनी
आंबाको झाऴ सावलीको अंबार
ओकखाल्या उभो लगे थंडोगार

आंबाकी आंबटी ना रायतो बनाओ
भुजकर आंबा ना पम्हो भी खाओ
आंबाकी लकऴी चुलोमा लगाओ
या सुख शांती साठी हवन कराओ

आंबाक पानाकी तोरन बानायलेव
धर क दरवाजाकी शोभा बऴायलेव
आंबा को झाऴ   केतरो से महान
कसेत फलको राजा करसेती गुणगान

****

७४.बेगरचार

जीत ऊत बेगरचार करन भयीं दाटी
जशी काही बापबेटाकी मायाच तुटी
एकच घरकी आता होय फाटाफुटी
माय कसे बोहु काहे अशीकशी रुठी

एकठण टुरा ना बीह्या करेव सुखमा
बोहु आयी घर, नाव ओको रूखमा
करीस शिकायत नहीरवजन एकमा
मी नही रहू कसे सासु क धाकमा

बोहु की आयकीस ना भयेव बेजार
बापला कसे आता करदेव बेगरचार
बाप क डोराला फुटी आसुकी धार
अंतकरण फाटेव ना भएव तारतार

मायबाप आमरा आती दयाका सागर
उपकार च नही फेळनका जिवनभर
सम मा संपती को मनमा बिचार धर
मायबाप काहां जायेती, बिचार कर

जन्म देईन ना पालनपोषण भी करीन
हातक फोळावानी तोरो जतन करीन
लहानोको मोठो करीन,जग देखाईन
दुय का चार हात भी तोरा करदेईन

जब तुमी होवो एकदुय टुराका बाप
नही पळनकी का उनपर तुमरी छाप
घर फोळशान मायबाप नोको तोळो
बेगरचार बुरीबला,नातो नोको जोळो

७५.पातर रोटी (मांड रोटी)
(चाल-चांदणं चांदणं)

रोटी त sssरोटी पातर रोटी
बसी रांधनला रांधनला मायबेटी।। धृ।।

पातर रोटी को मोठो से मान
पोवारी जातीकी आय वा शान
रोटी खानकी साद लगी मोठी।। १।।

गहुकी कणिक पिसाओना
पाणीलक ओला फिजाओना
तेलको मोहोन,नरम बनावनसाठी।। २।।

घळा भोळशांन कड्डु बनाओ
चुलो पर ठेवो ईस्तो लगाओ
चुलो फुकतानी गरमी भई मोठी।। ३।।

फिजी कणिक का लोया बनाओ
दुही   हातपरा ओला फैलाओ
कडुडु परा ठेवो शिजनसाठी।। ४।।

रोटी बनावनो ज्या बाई जानसे
ओकी रोटी हातपरा तानसे
नेणत बाई क हातपरा फाटी।। ५।।

आंबाको रस नहीत साखरको पाणी
ओक संग लगसेती अमृत वाणी
जरासो नोन गा टाको चव साठी ।। ६।।

आता पातर रोटी नामशेष होय
नवतीला रोटी कब बनावता आय
शिकाओ टुरीला रोटी बनावन साठी।। ७।।

७६.नदबाई चली ठुमकत

नदी बहे वाकळी तिकळी
चल बिचल से ओकी धार
कभी दुसरं नदी मा मिल
कभी   सात समुंदर पार

नाव   अलगलग नदीका
सब अलगलग ठिकाण
कही बळी नुकसान देही
कंही   ठरज़ासे वरदान

कही कसेती गंगा यमुना
कही सरस्वती, गोदावरी
तापी, ब्रम्हपुत्रा, वैनगंगा
कृष्णा,सिंधू,नर्मदा, कावेरी

सुखी नदी,आटज़ासे पानी
बाट   बरसात की देखसे
पानी   पळेव, आएव पुर
भयीं खुशी मोठी इटकासे

शांत मधुर स्वर गुंज़से
जब वरदायी ठरज़ासे
कभी विकराल रुप धर
मंग सत्यानाश कर देसे

नदी आमरी जिवन दायी
ओका केता सेती उपकार
साफ सुतरी ठेवौ नदीला
भेटे पर्यावरण , आधार.

****

मोरो परिचय



नाव :- धनलाल पोतनजी राहांगडाले
जन्मभूमी :- बरबसपुरा ता. तिरोडा जि.गोंदिया.
रहवास :- गजानन कॉलोनी रिंग रोड गोंदिया.
शिक्षण :- एम. ए. डीपी एड.

मोला नहानपण पासूनच नाटक, ड्रामा, भजन को छंद होतो. सन १९७३ मा गुरू दिक्षा लेयव. अना निर्व्यसनी रयशान शासन की सेवा करेव. अना नायब तहसीलदार मुहून सेवा निवृत्त भयेव.

सन १९९५ पासूनच कीर्तन प्रवचन को छंद लगेव. बादमा पोवारी बोली की तळमळ लगी अना पोवारी मा संपूर्ण कीर्तन चालू करेव. आब बी आल्हा गावनो, किर्तन करनो, लिखान करनो, गावमा नाटक ड्रामा को आयोजन करनो असा एकानेक छंद की जोपासना करुसू.

मायबोली पोवारी आपलो समाज को दर्पण आय. बोली समाजला एक धागामा बांधशान ठेवसे. आपसी प्रेमभाव अना भाईचारो बढ़ावसे. आपलो समाज को अमूल्य ठेवा जपत यवं काव्य संग्रह प्रस्तुत कर रही सेवं. काहीतरी समाजसेवा घड़े अशी आशा से.

विनम्र
से.नी.नायब तहसीलदार
श्री. डी. पी. राहांगडाले
गोंदिया
९०२१८९६५४०